International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 803-805

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 803-805
www.allresearchjournal.com
Received: 19-01-2016
Accepted: 20-02-2016

डॉ. माधवी शर्मा
Research Scholar, Deptt. of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India.

Correspondence
Shanno Devi
Research Scholar, Deptt. of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India.

सरस्वती का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप

डॉ. माधवी शर्मा

प्रस्तावना
वेदों में सरस्वती के आध्यात्मिक स्वरूप को ऋषियों ने बताया है

यस्ते स्तनः शषयो यो मयोभू–र्येन विष्वा पुष्यसि वार्याणि।
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः, सरस्वति तमिह धातवेऽकः।।

सरस्वती की अजस्र धारा अनवरत प्रवाहित करती है, उसका मुख्य ध्येय मानव का कल्याण करना है जो ज्ञान से परिपूर्ण है उसके पास धन स्वतः ही आ जाता है। सरस्वती से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।
सरस्वती शब्द की उत्पत्ति है– 'सरस्–वती' 'सरस, पद का शाब्दिक अर्थ है जल। जल के लिए प्रायः सरस् शब्द बहुवचनान्त सर् प्रयुक्त होता है। सर् शब्द जल तत्व, पवन और अग्नि से निर्मित है। जल (H_2O) का निर्माण हाइड्रोजन के दो परमाणु और ऑक्सीजन का एक परमाणु मिलकर करते हैं। हाइड्रोजन गैस से 'स' (पवन) और ऑक्सीजन गैस से 'र' निर्देषित हैं। पञ्चमहाभूतों में से केवल पवन (वायु) और जल तत्व ही ऐसे हैं जो चलायमान हैं अर्थात् जिनमें तरंगें हैं। इस प्रकार गुणों के विक्षोभ से जल तरंग और वायु तरंग जनित ध्वनियों से उच्च तरंगें और अवरतरंगें उत्पन्न हुई। यह सरस्वती के उत्पत्ति का वैज्ञानिक रूप हैं सरस्वती ज्ञान की महोदधि है।

सरस्वती तु'धी' देवी च प्रजापति
ऐं बीजं कष्यपष्वषिर्यन्त्रं चाऽपि सरस्वती
कथिताऽन्यस्य भूती तु हषार च प्रभवा पुनः
कलात्मकता स उल्लासो द्वयं प्रतिफलम् मतम्।।

धी अक्षर की देवी – सरस्वती देवता– प्रजापति, बीज–ऐं, ऋषि–कष्यप, यन्त्र–सरस्वती यन्त्रम्, विभूति– हर्ष एवं प्रभाव प्रतिफलम्– उल्लास एवं कलात्मकता हैं।
ज्ञान चेतनता के दो स्त्रोत हैं– एक प्रज्ञा और दूसरी बुद्धि। प्रज्ञा आात्मिक उत्कर्ष के पथ की प्रषस्त करती है। और बुद्धि लौकिक व्यवहार के ज्ञान को देने वाली है। बुद्धि का स्वरूप मस्तिष्क है और प्रज्ञा का अन्तःकरण है। प्रज्ञा की अधिष्ठात्री देवी गायत्री और बुद्धि की सञ्चारिणी सरस्वती है। सरस्वती न केवल ज्ञान की प्ररणा है अपितु साहित्य तथा विज्ञान की प्रश्रयदाता है। सामवेद में लिखा है–

पावका नः सरस्वती वाजेभिवां जिनीवती
यज्ञं वष्टु धियावसु।।

सरस्वती वैदिक युग की तीन मुख्य शक्तियों (इडा, मही एवं सरस्वती) में से एक है

त्रिस्तो वाच उदिरते गावो मिमन्ति धेनवः।
हरिरेति कनिक्रदत्।।

सामवेद में कहा है– प्रकृति के रूप में निराकार मानसिक शक्ति के साथ सरस्वती जब सामने आती है तो वह 'सप्त स्वर' कहलाती है–

उत नः प्रिया प्रियासु सप्त स्वसा सुजुष्टा
सरस्वती स्तोम्या भूत

सरस्वती संपूर्ण व्यक्त एवं अव्यक्त सृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कुछ दृष्यमान है, वह व्यक्त सृष्टि है। इसके अतिरिक्त शेष प्रकृति अव्यक्त है। सरस्वती ज्ञान की, जीवन की, निरन्तर चलायमान सृष्टि क्रम की, और आनन्द की अधिष्ठात्री देवी है। इसीलिए इन सबके प्रतीक स्वरूप पुस्तक, कमल पुष्प, अक्षमाला तथा वीणा को जोड़ दिया गया है। और सरस्वती को समस्त भाषाओं की, वेदों की और लिपियों की, समस्त ललित कलाओं की जननी कहा गया है।

भौतिक विज्ञान के जनक न्यूटन का 'जड़त्व का नियम कि कोई स्थिर वस्तु तब तक स्थिर रहती है जब तक उसे कोई बाहरी बल नहीं हटाता है। सृष्टि की उत्पत्ति से पहले ब्रह्माण्ड में एक अव्यक्त नाद 'ॐ' व्याप्त था जिसे अनहद् नाद कहते हैं। जेसा ब्रह्माण्ड में है वैसा ही मानवषरीर में यह अनहद् नाद मानव शरीर निनादित है। जैसे Ultra Sound
या Super Sonic ध्वनियों को स्थूल कानों से नहीं सुन सकते उसी प्रकार इस अनहद् नाद को भी किसी उपकरण या कर्णेन्द्रिय के द्वारा नहीं सुना जा सकता। यह अव्यक्त ध्वनि है इसी अव्यक्त ध्वनि से ही समस्त व्यक्त ध्वनियां उत्पन्न होती हैं। परम पुरूष ईष्वर और प्रकृति से संयोग से इस सत्व, तम और रजस् रूपी त्रिगुणात्मक सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

प्रकृति ने ही सृष्टि हेतु वायु की उत्पत्ति की जिससे इस अनहद ध्वनि में विक्षोभ के द्वारा समस्त ध्वनियों की उत्पत्ति की। ॐ इन्द्रियग्राह्य ध्वनियों का उत्पत्ति कर्ता हैं।

न्यूटन के सिद्धान्त के अनुसार किसी भी उत्पत्ति के लिए किसी भी वस्तु की गतिषीलता के लिए बाहरी बल जरूरी है बिना बाहरी बल लगे वस्तु स्थिर रहती है। यदि वायु का बाहरी बल आरोपित नहीं होता, वायु जनित विक्षोभ नहीं होता तो निराकार अनहद से इन्द्रिय साकार ध्वनियां उत्पन्न नहीं होती। और यह अनहद नाद अपने स्वरूप में उसी स्थिति में रहता। सभी ध्वनियां अनहद में वैसे ही स्थिति में हैं, आभासित हैं जैसे ब्रह्म में जगत्। इन्द्रिय ग्राह्य ध्वनियों में वे समस्त ध्वनियां आती हैं जिन्हें या तो कानों से सुना जा सकता है या वे यन्त्रों के माध्यम से ग्राह्य होते हैं। विज्ञान का मानना है कि ध्वनि (निर्वात) खाली जगह में नहीं गमन कर सकती। सृष्टि की रचना के प्रयोजन हेतु वायु का आश्रय लेकर वाणी की उत्पत्ति की।

वैज्ञानिकों का मानना है कि जब भी ब्रह्माण्ड का उद्भव हुआ तो सबसे पहले सूक्ष्मतम कण की उपस्थिति रही और इस सूक्ष्मतम कण में महाविस्फोट हुआ और जिससे यह विषाल ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्माण्ड का अधिकांष भाग दृष्यमान पदार्थ का भाग नहीं था और निर्वात के जैसा था। जैसे ही महाविस्फोट हुआ तो महाविस्फोट से उत्पन्न होने वाले भीषण ऊर्जा की ध्वनि पूरे ब्रह्माण्ड उत्पत्ति में व्याप्त हो गयी। महाविस्फोट से उत्पन्न होने वाली ध्वनि की उत्पत्ति दो वस्तुओं के टकराने से नहीं हुई इसलिए यह ध्वनि आहत नाद न होकर अनहद् नाद है। सृष्टि के कण–कण में यही अनहद् नाद अव्यक्त रूप में विद्यमान है।

यजुर्वेद में सरस्वती को मस्तिष्क को रस देने वाला महान् सरोवर बताया है–

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विष्वा वि राजति

सरस्वती का यह सरोवर स्निग्धत्व से परिपूर्ण हैं ये सरोवर चार हैं। वैज्ञानिको ने भी चार गर्त या सरोवर माना है। दो सिर के पूर्व और पष्चिम अर्धभाग में है। ये दोनों बृहत् मस्तिष्क में है। तीसरा वेंट्रिकल थैलमस में है। चौथा गर्त मेडुला, मेरूरज्जु से ऊपर के भाग में है। ये चारों सरोवर छोटी–छोटी वाहिनियों से जुड़ी हुई हैं। इन वाहिनियों से ही सिर और मेरूतन्त्र का रस प्रवाहित होता है। यजुर्वेद में कहा है–

आजुझाना सरस्वतीन्द्रायेद्रियाणि वीर्यम्।
इडाभिरष्विनाविषं समूर्जं सं रयिं दधुः।।

सरस्वती शरीर को और आत्मा को शारीरिक और आत्मिक शक्ति प्रदान करती हैं सरस्वती इडा, पिंगला का सहयोग लेकर मनुष्य को ज्ञान प्रदान करती है।

प्रज्ञा मानव की महती विषेषता है। सरस्वती ही प्रज्ञा शक्ति या मनःषक्ति हैं मन के दो रूप हैं– व्यष्टि और समष्टि, व्यक्तिगत और समूहगत। व्यष्टि मन व्यक्तिगत है। प्रत्येक व्यक्ति का मनन–चिन्तन पृथक हैं व्यक्तिगत मन असंख्य है और मन का स्थूल रूप है। मानव के अन्दर अवस्थित प्रज्ञा, बुद्धि या मन सूक्ष्म शक्ति है। शतपथ ब्रह्मण में कहा है–

यन्मनसा ध्यायतित, तद् वाचा वदति
यद् वाचा वदति, तद्कर्मणा करोति
यत्कर्मणा करोति, तदभि संपद्यते।

अर्थात् मन जैसा सोचता है वैसा ही मनुष्य बोलता है, जैसा बोलता है वैसा ही कार्य करता हैं और जैसा कर्म करता है वैसा ही मनुष्य हो जाता है। जिस प्रकार संचित बिजली हमारे बल्ब, पंखे आदि में प्रकट होती है और तदनुसार वे प्रकाष, उष्णता और ठण्डी हवा देते हैं, इसी प्रकार मन की सूक्ष्म शक्ति वाणी और कर्म के रूप में मूर्तरूप ग्रहण करती है। यह व्यक्तिगत मन जब सामूहिक मन बनकर समष्टि मन होता है। यह समष्टि मन असीम अनन्त और अनिवर्चनीय है। इस अमृत तत्व की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती हैं इससे ही ज्ञान की समस्त धाराऐं कला, विज्ञान आदि विकसित हुई हैं। सरस्वती ज्ञान की महोदधि है।

ऋग्वेद में कहा है–

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विष्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्या–एतावती महिनासं बभूव।।

यह सरस्वती सृष्टि के मूल में है। यह तीनों लोकों का निर्माता है। यह सरस्वती द्यु लोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी लोक में वायु के समान सर्वत्र व्याप्त है। इसलिए सरस्वती को ऋग्वेद में –त्रिषधस्था' तीन स्थानों पर रहने वाली कहा है। सरस्वती के तीन स्थान हैं– द्युलोक अर्थात् मानव शरीर का षिरोभाग षिरो मेरूद्रव (coebro-spinal- Fliuid)। सिर के दोनों अर्ध भागों में एक–एक विषाल अमृत कलष हैं। (Veutricles) है। अन्तरिक्ष लोक मानव के मस्तक के नीचे वाले मध्यभाग है। इसमें पीनियल और पिट्यूटरी ग्रन्थियों के बीच में थेलमस में तीसरा अमृत कलष स्थित है। द्यूलोक गले से नीचे कबन्ध वाला भाग हैं इसमें मेरूदण्ड मेडूला में चौथा अमृत कलष है। इसलिए ऋग्वेद में कहा है–

आपप्रुषी पार्थिवानि–उरू रजो अन्तरिक्षम्।
सरस्वती निदस्पातु।

इस प्रकार सरस्वती अमृत–स्त्राव से पुष्ट करती है।

अथर्ववेद में लिखा है–

सप्त क्षरन्ति षिषवे मरूत्वते, पित्रे पुत्रासो.।
उभे इदस्योभे अस्य राजत उभेयतेते उभे अस्य पुष्यतः।।

सरस्वती में सात नदियों का मिलन होता है। ये सरस्वती की सात स्वसा हैं। ये सात नदियां हैं– पांच ज्ञानेन्द्रियां मन और बुद्धि। इन सातों में से दो प्रमुख हैं– ज्ञानतन्तु (sensory Nerves Affereut) और क्रियातन्तु (Motor Nerves, Effereut)। ये दोनों प्रकार की रक्त वाहिनी सरस्वती के कार्य को क्रियान्वित रखती हैं। ज्ञानतन्तु बाह्य जगत से विषयों का संकलन, संग्रह या ग्रहण करते हैं एवं प्रज्ञा के पास निर्णय के लिए भेजते हैं। बुद्धि का जो निर्णय होता है उसे क्रियातन्त्र कार्य रूप में परिणित करते हैं। मानव का समस्त कार्य सरस्वती के इस जैविक रूप से निर्बाध गति से चलता है।

ऋग्वेद के अन्य मन्त्र में कहा है–

सुदेवो असि वरूण, यस्य ते सप्तसिन्धवः।
अनुक्षरन्ति काकुदं, सूर्म्य सुषिरामिव।।

महर्षि पतञ्जनि ने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में इस मन्त्र को उद्धृत करते हुए लिखा है कि वरूण की सात नदियां हैं। ये सातों नदियां काकु (तालु) में आकर मिलती हैं। तालु में ये सभी नदियां वाहिनियों के माध्यम से पहुंचती हैं। इस तालु में ही ब्रह्म का वास होता है।

जैव वैज्ञानिकों का मानना है कि मानव शरीर में एक रस की धारा अनवरत बहती है। इस अनवरत बहने वाले रस को वैज्ञानिक षिरो मेरू द्रव्य कहते हैं। और यही वैदिक भाषा के अनुसार सरस्वती है। यह रस जीवात्मा के जीवन के लिए जरूरी हैं इस रस से ही जीवात्मा को ऊर्जा मिलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ऋग्वेद 1.164.49।
2. यजुर्वेद 38.5।
3. अथर्ववेद 7.10.1।
4. यजुर्वेद 20.60।
5. यजुर्वेद 20.65।
6. यजुर्वेद 21.48।
7. यजुर्वेद 21.53।
8. यजुर्वेद 19.93।
9. यजुर्वेद 21.37।
10. यजुर्वेद 19.82।
11. यजुर्वेद 19.83।
12. यजुर्वेद 20.48।
13. ऋग्वेद 1.3.10।
14. ऋग्वेद 1.3.11।
15. ऋग्वेद 1.3.13।
16. यजुर्वेद 21.13।
17. अथर्ववेद 7.47.1।
18. यजुर्वेद 34.11।
19. अथर्ववेद 7.47.2।
20. नारद स्मृति।
21. शतपथ ब्राह्मण।
22. ऋग्वेद 10.125.5।
23. ऋग्वेद 10.125.8।
24. अथर्ववेद 7.57.2।
25. यजुर्वेद 34.11।
26. ऋग्वेद 8.69.12।
27. ऋग्वेद 6.61.11।
28. बृहस्पति स्मृति।
29. ऋग्वेद 6.61.12।
30. सामवेद 6.1.1461।